

## हिन्दी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में अभिनेत्रियों की उपस्थिति का सामान्य संकट

डा० आलोक कुमार राय

मब्बी, दरभंगा

प्राचीन समय में हमारे देश में संस्कृत नाट्यशास्त्र प्रचलन में था। नृत्य की शुरुआत की संगति हम नाट्य में देख सकते हैं। भाषाशास्त्रीय विवेचन से यह प्रमाणित हो जाता है। 10वीं शताब्दी से हम भारत में परम्परागत थियेटर को लोकप्रिय होते हुए देख सकते हैं। आगे चलकर इन्हीं थियेटर कम्पनियों का स्थान चित्रपट ने ले लिया।

भारतेन्दु युग में ही पारसी थियेट्रिकल कम्पनियां स्थापित हो चुकी थी। इनका उद्देश्य व्यावसायिक था। इन्होंने अपने नाटकों को चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए परदों की तड़क-भड़क और वेश-भूषा की चमक-दमक के साथ दृश्यों में अद्भूत तत्वों का समावेश किया।<sup>1</sup> हालांकि भारतेन्दु और जयशंकर प्रसाद जैसे नाटककारों ने इसका समर्थन नहीं किया, इसके बावजूद भारतीय सिनेमा के विकास क्रम में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। भारतेन्दु ने सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं उद्देश्यपूर्ण नाटकों पर बल दिया। इसी कारण से उन्होंने पारसी थियेटर कम्पनी का विरोध किया। रंगमंच का उद्देश्य मात्र सामान्य जनता का मनोरंजन करके धनोपार्जन करना हो, भारतेन्दु इसके खिलाफ थे।

डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है— वस्तुतः भारतेन्दु काल में नाटकों की रचना का मूल उद्देश्य मनोरंजन के साथ ही जनमानस को जाग्रत करना और उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न करना था। फलस्वरूप इनमें सत्य, न्याय, त्याग, उदारता आदि मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने, प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम जगाने, अनुकरणीय पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों के प्रति समाज को आकृष्ट करने और नवीनता की आंधी से समाज को सुरक्षित रखते हुए, उसका सुधार एवं

परिष्कार करने पर अधिक बल दिया गया है। शास्त्रीय दृष्टि से भारतेन्दुकालीन नाटक संस्कृत नाट्यशास्त्र की मर्यादा की रक्षा करते हुए, युग और परिस्थिति के अनुसार उसमें थोड़ी छूट लेकर लिखे गए हैं। इस समय तक पारसी थिएटरिकल कम्पनियां स्थापित हो चुकी थीं। इनका उद्देश्य व्यावसायिक था, फलस्वरूप इनमें अत्यन्त हीन रुचि के दृश्यों तथा नाच-गानों की योजना की जाती थी। भारतेन्दु ने इनका प्रबल विरोध किया और सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं उद्देश्यपूर्ण नाटकों को महत्व दिया।<sup>2</sup>

भारतीय सिनेमा के विकास में पारसी थियेटर कम्पनियों ने अहम भूमिका निभाई है। इसके बावजूद अभिनेत्रियों की उपस्थिति का संकट पारसी थियेटर से हिन्दी सिनेमा के प्रारंभिक दौर तक सर्वत्र दिखलाई पड़ती है।

भारतीय सिनेमा के प्रारंभिक दौर से पूर्व के नाटकों में भी स्त्री पात्र की भूमिका पुरुष ही करते थे। यही कारण है कि आगे चलकर हिन्दी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में भी अभिनेत्रियों की उपस्थिति का संकट छाया रहा।

'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म में तारामती की भूमिका के लिए दादा साहब फाल्के को कोई महिला कलाकार नहीं मिल सकी। फाल्केने अपने लेख में स्वीकार किया गया है स्त्री पात्र की भूमिका के लिए वह वेश्या बाजार भी गए, किन्तु कोई वेश्या भी तैयार न हुई। तब जाकर उन्होंने तत्कालीन मंच अभिनेता 'सालुंके' से ही तारामती का अभिनय करवाया।<sup>3</sup>

वस्तुतः उस समय फिल्मों के लिए नारी पात्र की समस्या सबसे बड़ी समस्याओं की कतार में थी। यही कारण है कि फाल्के ने 'कालिया मर्दन' तथा 'श्रीकृष्ण जन्म' में अपनी पाँच वर्षीय पुत्री और परिवार के अन्य सदस्यों से अभिनय करवाया था। वे लिखते हैं— भाइयों सीता और द्रौपदी की भूमिका यदि भद्दे इशारों, मचलती आँखों, अर्धनग्न वक्षों और झूलते कूल्हों से अभिनय की जाए, तो आपको कैसा लगेगा? क्या आपको गुस्सा नहीं आएगा? मैं चाहता हूँ कि हमारे स्टूडियो में से इस तरह की महिलाएं हट जाएं। ईश्वर की कृपा से, इन वेश्याओं को

हटाकर भली महिलाओं के फिल्म में अभिनय करने से स्टूडियोज में बहुत बड़ा परिवर्तन होगा— क्योंकि तभी स्टूडियो की तुलना वेश्यालय से नहीं की जा सकेगी।<sup>4</sup>

वे आगे लिखते हैं— अपनी फिल्म 'सेतुबन्ध' में एक अभिनेत्री को सीता का अभिनय करना था। कई एक्ट्रेस रिहर्सल में आईं। उनमें से एक को चुनकर मैंने एक घंटे तक भूमिका समझाई। अन्त में उसने कहा— 'आप फिक्र न करें, मैं बढ़िया रोल करूंगी। हाँ, मुझे जरी की साड़ी ला देना।' अब मैंने अपना सिर पकड़ा, जंगल में घूमती सीता—राम की जोड़ी की कौन सी मूर्ति उसके दिमाग में बसी है? एक अन्य औरत को मुझे पल्ला लेना और भद्रता से बैठना सिखाने के लिए स्वयं कसरत करनी पड़ी, लेकिन उसे जरा भी समझ नहीं आई कि विरह में और दुःख में नारी की अवस्था कैसी होती है। ऐसी भद्दी मॉडलों को परखकर मैंने निश्चय किया कि सीता की तरह की महान नारी की भूमिका के लिए भद्र घर की महिला का आगे आना जरूरी है।<sup>5</sup>

हिन्दी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में संभ्रांत परिवारों में इस कला के प्रति सम्मान का भाव नहीं था। हमारा समाज भी कई तरह के बंधनों से जकड़ा हुआ था। ऐसी स्थिति में अभिनेत्रियों का संकट स्वाभाविक था। इसके बावजूद मूक फिल्मों के दौर में ही धीरेन गांगुली जैसे फिल्म निर्माता हुए जिन्होंने अपनी पत्नी और पुत्रियों को भी फिल्मों में काम दिया।<sup>6</sup> इससे निस्संदेह कोलकाता के संभ्रांत परिवारों में इस कला के प्रति सम्मान बढ़ा और नए लड़के—लड़कियों इसकी तरफ प्रवृत्त हुए।

तीस के दशक में बोलती फिल्मों ने सुलोचना (रुबी मेयर्स) सरीखी मूक फिल्मों की सफल अभिनेत्रियों को हिन्दी में संवाद बोलने के लिए मजबूर कर दिया। इसका परिणाम यह निकला कि अभिनेत्रियों की एक नई पौध की जरूरत महसूस हुई। आवाज के आ जाने से पुरुष अब स्त्रियों की भूमिका भी नहीं कर सकते थे।<sup>7</sup> परिणामतः अच्छे घरों की लड़कियों को फिल्मी दुनिया में लाने की कोशिशें शुरू हुईं। देविका रानी तो प्रथम अभिनेत्री का खिताब पा ही चुकी थी पर दुर्गा खोटे सरीखी अभिनेत्रियों ने पर्दे पर आकर अभिनेत्रियों को एक नई गरिमा

प्रदान की। जहानआरा, कज्जन, जद्दनबाई, दुर्गा खोटे, शांता आप्टे, कानन देवी, जमुना, छाया देवी, देविका रानी से एक नया दौर शुरु हुआ।<sup>8</sup>

एक वह जमाना था जब सिनेमा में काम करने के लिए तवायफों तक ने इनकार कर दिया था और आज सम्भ्रान्त परिवारों की लड़कियाँ तक सिनेमा के काम करने के लिए बेकरार हैं। 'ब्रेक' पाने के लिए ये लड़कियाँ बड़े-से-बड़े समझौते करने से भी नहीं हिचकिचातीं।<sup>9</sup> अपना सर्वस्व दांव पर लगा देने के बाद भी हजारों में एक-आध को ही कभी मौका मिल पाता है। इस तरह हम देखते हैं कि पारसी थियेटर से हिन्दी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में अभिनेत्रियों की उपस्थिति का सामान्य संकट भले रहा हो, पर वर्तमान समय इसके विपरीत है।

संदर्भ सूची :-

<sup>1</sup>हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक-डा. नगेन्द्र, पृ.सं.-150

<sup>2</sup>वही, पृ.सं.-470

<sup>3</sup>हिन्दी सिनेमा का इतिहास- संजीव श्रीवास्तव, प्रकाशन विभाग, पृ.सं.-7

<sup>4</sup>पटकथा, 'भले सुसंस्कृत महिलाओं द्वारा पिफिल्मों में अभिनय', अंक-4, डी.जी. फाल्के। पृ.सं.

-29

<sup>5</sup>वही

<sup>6</sup>हिन्दी सिनेमा का इतिहास- संजीव श्रीवास्तव, प्रकाशन विभाग, पृ.सं.-10

<sup>7</sup>सिनेमा:कल,आज,कल - विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन, पृ.सं.-191

<sup>8</sup>वही

<sup>9</sup>राजकपूर : आधी हकीकत आध फसाना -प्रहलाद अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, पृ.सं -17